

## क्या मीडिया की घेराबंदी की जा रही है?

### संदर्भ

मीडिया में अनेक संचार माध्यमों को शामिल किया गया है, जैसे- टेलीविज़न, रेडियो, सनिमा, समाचार-पत्र, पत्रिकाएं और इंटरनेट आधारित वेबसाइट। हाल ही में एन.डी.टी.वी. के चेयरमैन पर सी.बी.आई. ने वित्तीय अनियमितताओं के चलते छापेमारी की। अतः इसी छापेमारी के कारण मीडिया जगत में यह बहस छड़ी हुई है कि सरकार द्वारा प्रेस की स्वतंत्रता को कम किया जा रहा है। अतः हम इसी बहस के वाद-प्रतिवाद-संवाद पर चर्चा करेंगे।

### वाद

- कई पत्रकारों का मानना है कि यह सरिफ मीडिया ही नहीं है, जो घेराबंदी की शकिकर हुई है, बल्कि "भारत का आइडिया" (Idea of India) को ही दबाया जा रहा है।
- ऐसा लग रहा है कि मीडिया पर घेराबंदी एन.डी.टी.वी. के प्रमोटर्स पर छापे से शुरू हो गई है।
- तुर्की की महिला उपन्यासकार एलीफ सर्फेक ने भारत के बारे में कहा था कि देश एक अस्तित्वगत संकट से गुजर रहा है। डर, क्रोध, चिंता सामान्य हो गए हैं। कोई भी कसिी पर भरोसा नहीं करता है। कोई भी सुरक्षति नहीं लगता है। लोगों सहति पत्रकारों द्वारा सरकार को अपनी वफादारी साबति करने की कोशशि की जा रही है।
- देश में जो कुछ हो रहा है यह संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, तुर्की, यहाँ तक कि फ्रांस में हो रहे राष्ट्रवादी दंगों के समान है।
- अगर देश में मीडिया स्वतंत्र है तथा उस पर कोई पाबंदी नहीं है तो विश्व प्रेस फ्रीडम सूचकांक में भारत की रैंकिंग क्यों घट रही है, जो हाल ही में 133वें स्थान से घटकर 136वें स्थान पर आ गई है।

### प्रतिवाद

- जसि प्रकार कुछ लोगों द्वारा जनता के बड़े समूह में यह फैलाया जा रहा था कि इस्लाम खतरे में है, उसी प्रकार भारतीय मीडिया के कुछ हसिसे द्वारा पछिले कुछ महीनों से इसी प्रकार का प्रचार किया जा रहा है कि भारतीय मीडिया की स्वतंत्रता को कुछ कम किया जा रहा है।
- दरअसल केंद्र में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एन.डी.ए. सरकार बनने के बाद से ही पत्रकारों के तथाकथति वाम-उदारवादी (left-liberal) वर्ग द्वारा उन्मादपूर्ण व्यवहार का प्रदर्शन करते हुए यह कहा जा रहा था कि भारतीय मीडिया की घेराबंदी शुरू हो गई है।
- इस तरह का वचिकर मूल रूप से मोदी के खलिाफ वाम-उदारवादी की नापसंदगी के कारण व्यक्त किया गया है। अतः यह वचिकर कि मीडिया की घेराबंदी की जा रही है, केवल एक भ्रामक और वैचारिकि पूर्वाग्रहों का परिणाम है।
- मीडिया की घेराबंदी के आरोप को साबति करने के लयि कोई सबूत वदियमान नहीं है, स्वतंत्र भारत में ऐसा केवल आपातकाल के दौरान हुआ था।
- वसतुतः 2002 में मोदी के खलिाफ वाम-उदारवादी मीडिया द्वारा जो अभयान चलाया गया था उसकी सोच आज भी भाजपा सरकार के प्रतावैसी ही बनी हुई है। देखा जाए तो वर्तमान सरकार, खासकर प्रधानमंत्री की आप्दनि प्रटि मीडिया या सोशल मीडिया पर आलोचना होती रहति है।
- मुसलमानों पर हमले की रिपोर्ट (खासतौर पर बीफ मांस खाने या बेचने से संबंधति) देश में सांप्रदायकिता को उत्तेजति करति है और सरकार को अस्थिर भी बनाति है।
- उत्तर प्रदेश वधिनसभा चुनाव अभयान के दौरान वाम-उदारवादी मीडिया ने एक अभयान चलाया था और कहा था कि भाजपा का वोट बैंक 2014 के लोक सभा चुनावों के बाद घट गया है। क्या सरकार ने इस तरह कि रिपोर्टिग पर कोई ठोस प्रतिक्रिया व्यक्त की?
- क्या कसिी भी पत्रकार को सरकार वरिधी वचिकरों का प्रचार करने के लयि परेशान किया गया है? क्या कसिी को गरिफ्तार किया गया है या पुलिस द्वारा कोई पूछताछ की गई है? यद ऐसा नहीं है तो यह कहने का क्या आधार है कि मीडिया की घेराबंदी की जा रही है?
- एन.डी.टी.वी. के प्रमोटर्स पर हालयि छापे के कारण मीडिया यह कह रहा है कि मीडिया की घेराबंदी की जा रही है, लेकिन यह छाप महज़ वित्तीय अनियमितताओं के कारण डाला गया था न कि मीडिया की स्वतंत्रता को कम करने के लयि।

### संवाद

- एन.डी.टी.वी. पर सी.बी.आई. की छापेमारी को टपिपणीकार प्रेस की स्वतंत्रता और उत्तरदायतिव का हनन नहीं मानते हैं, लेकिन अगर सरकार की नीतयिों और राजनीति पर सवाल उठाए जाने के कारण लोकतांत्रिकि संस्थानों और लोगों के खलिाफ सेलेक्टवि तरीके से हमला किया जाता है तो इस प्रकार की कार्यवाही गलत है।
- लेकिन क्या एन.डी.टी.वी. के पास ठोस सबूत मौजूद है कि मीडिया की घेराबंदी की जा रही है? इस प्रकार की नरिणायक भवषियवाणी करना शायद गलत होगा।
- हाल ही में रोहति वेमूला और कश्मीर पर बनी फलिमों की स्क्रीनिग को अस्वीकार करने जैसे मामलों ने एन.डी.टी.वी. की छापेमारी जैसी सुरखयिों नहीं बटोरी हैं। क्या मीडिया के प्रता इस प्रकार का एकमात्र वचिकर रखना संभव है? यह नशिचति रूप से एक वैध आलोचना है। फरि भी एन.डी.टी.वी. एक

शक्तिशाली और प्रभावशाली खलिाड़ी होने के नाते सामान्य पत्रकार,लेखक, फलिंम नरिमाताओं और ब्लॉग लिखने वालों के लयिे चतिा का एक कारण होना चाहयिे ।

- अगर सरकार अभजिात वर्ग के खलिाफ कारयवाही करने से दूर भागेगी तो जो कम शक्तिशाली हैं, उनका क्या?
- यह भी अनुमान लगाया जाता है कजिादा मीडयिा की घेराबंदी, मीडयिा को सकरयिे रूप से राज्य का सहयोगी बनाने में मदद करती है ।
- अतः यह मीडयिा की घेराबंदी नहीं है, बल्कयिे यह मीडयिा के राजनीतिक और नैतिक वचिारों की रक्षा है ।

### नषिकरष

मीडयिा ने एक-तरफ जहाँ लोगों को जागरूक बनाया है, वही दूसरी तरफ सरकार को देश की समस्याओं से अवगत भी कराया है । ध्यातव्य है कभीडयिा को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माने जाने के कारण उससे यह अपेक्षा की जाती है की वह देशहति में अपना सकारात्मक योगदान दे । बदलते समय में मीडयिा की भूमिका भी बदल रही है तथा उसके रपिारटगि करने का तरीका भी । अतः मीडयिा को अपने स्वार्थपूरतसे परचालन के बजाए एक तटस्थ वाचडॉग की भूमिका नभिानी चाहयिे ।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/is-the-media-under-siege>

